विषयानुक्रमणिका

	पृ० सं०
प्राक्कथन	**क-ङ**
भूमिका	**अ-ब**
प्रथम अध्याय : अवनद्ध वाद्यों का स्वरूप एवं लक्षण	**1-26**
अवनद्ध वाद्यों से अभिप्राय	8
अवनद्ध का शाब्दिक अर्थ	8-9
अवनद्ध वाद्यों के वाचक शब्द	9-13
अवनद्ध	9
आनद्ध	10
वितत	10
आतोद्य	11
पुष्कर	12
त्रिपुष्कर	12
भाण्ड	12
अवनद्ध वाद्यों की उत्पत्ति	13
अवनद्ध वाद्यों का महत्त्व	19-26
संगीत में समय की नियमितता में अवनद्ध वाद्यों का महत्त्व	21
सौन्दर्यवर्धन में अवनद्ध वाद्यों का महत्त्व	21
अवनद्धवाद्यों द्वारा सांगीतिक स्थायित्व एवं संरक्षण	22
स्वतंत्र वादन में अवनद्ध वाद्यों का महत्त्व	22
सांगीतिक संयम	23
गति भेद एवं रसनिष्पत्ति में अवनद्ध वाद्यों का महत्व	23
संगीत का मूल्यांकन एवं अवनद्ध वाद्य	24
सामाजिक जीवन में अवनद्ध वाद्यों का महत्त्व	24
विवाह के अवसर पर अवनद्ध वाद्यों का महत्त्व	24
मृत्यु के समय में अवनद्ध वाद्यों का महत्त्व	25

पृ० सं०

दैनिक कार्य में अवनद्ध वाद्यों का महत्त्व 25
धार्मिक कार्य में अवनद्ध वाद्यों का महत्त्व 25
सामाजिक कार्य में अवनद्ध वाद्यों का महत्त्व 25
सैनिक कार्य में अवनद्ध वाद्यों का महत्त्व 26

द्वितीय अध्याय : वाद्यों के प्रकार **27-62**

अंग अवनद्ध वाद्य 28
प्रत्यंग अवनद्ध वाद्य 30
आंकिक 31
अर्ध्वक 32
आलिंग्यक 33
अन्य प्रकार 34-62

आवज डक्का पणव
उपंग डफ पटह
करटा डक्कुली पखावज
करचक्र ढक्का भाण
कुडुक्का ढवस भेरी
कुडुवा ढोल मृदंग
खोल तबला मर्दल
खंजरी तम्बकी मंडिडक्का
घट दर्दर सेल्लुका
घडस दमामा त्रिवली
चंग दुंदुभि
झल्लरी धौंसा
डमरु नाल
डिमडिम निसान

पृ० सं०

तृतीय अध्याय : अवनद्ध वाद्यों के निर्माण के सिद्धान्त एवं विधि 63-92

अवनद्ध वाद्यों की संरचना 64

अवनद्ध वाद्यों की आकृति 69

हरीतिकी 70

यवमध्य 72

गोपुच्छ 73

निर्माण पदार्थ 74

मूल ढांचा के सम्बन्ध में 75

अवनद्ध वाद्य-मुख पर चर्म के संबंध में 79

मुख चर्म को खींचने या तानने के लिए बद्धी या डोरी 82

मुख विलेपन प्रक्रिया 82

मिट्टी विलेपन किए जाने वाले अवनद्ध वाद्य 83

आटा विलेपन किए जाने वाले अवनद्ध वाद्य 83

काले रंग की स्याही विलेपन किए जाने वाले अवनद्ध वाद्य 84

अवनद्ध वाद्यों की निर्माण विधि 84

चतुर्थ अध्याय : अवनद्ध वाद्यों की परम्परा 93-111

वैदिक युग के अवनद्ध वाद्य 94

महाकाव्य युग में अवनद्ध वाद्यों की परम्परा 95

रामायण कालीन अवनद्ध वाद्य 95

महाभारत कालीन अवनद्ध वाद्य 96

पाणिनियुग के अवनद्ध वाद्य 97

बौद्ध तथा जैन युग के अवनद्ध वाद्य 98

जैन युग के अवनद्ध वाद्य 98

पौराणिक युग के अवनद्ध वाद्य 99

पृ० सं०

प्राचीन युग के अवनद्ध वाद्य 101

संगीत रत्नाकर में वर्णित अवनद्ध वाद्य 105

मध्ययुगीन अवनद्ध वाद्य 106

आधुनिक अवनद्ध वाद्य 108

पंचम अध्याय : अवनद्ध वाद्यों के वादन सिद्धांत 112-156

वैदिक शास्त्र-ग्रन्थों में वर्णित अवनद्ध वाद्य-वादन सिद्धान्त 113

प्राचीन-शास्त्र-ग्रन्थों में वर्णित अवनद्ध वाद्य-वादन सिद्धान्त 115

मार्ग 117

विलेपन 118

करण 118

(क) रूप, (ख) कृतप्रतिकृत (ग) प्रतिभेद

(घ) रूप शेष (ङ) ओघ (च) प्रतिशुष्क

त्रियति 120

(क) समायति (ख) स्त्रोतोगता या स्त्रोतवहा (ग)गोपुचछ यति

त्रिलय 122

त्रिगत 123

(क) तत्त्व (ख) अनुगत (ग) ओघ

त्रिप्रचार 124

(क) सम प्रचार (ख) विषम प्रचार (ग)समविषम प्रचार

त्रिसंयोग 125

(क) गुरु संचय (ख) लघु संचय (ग) गुरुलघु संचय

त्रिपाणिक 126

(क) समपाणि (ख) अवपाणि (ग) उपरिपाणि

पंचपाणि प्रहत 127

(क) समपाणि प्रहत (ख) अर्धपाणि प्रहत

(ग) अर्धार्धपाणि प्रहत (घ) पार्श्वपाणि प्रहत (ङ) प्रदेशिनी प्रहत

पृ० सं०

त्रिप्रहार 128

(क) निगृहित प्रहार (ख) अर्धनिगृहित प्रहार (ग) मुक्त प्रहार

त्रिमार्जना 129

बीस अलंकार 130

अष्टादश जातियां 134

मध्ययुगीन शास्त्र-ग्रन्थों में वर्णित अवनद्ध वाद्य-वादन सिद्धांत 140

हृदय से उत्पन्न हस्त पाट 142

वामदेव से उत्पन्न हस्त पाट 142

अघोर से उत्पन्न हस्त पाट 143

तत्पुरुष से उत्पन्न हस्त पाट 143

ईशान से उत्पन्न हस्त पाट 144

नंदिकेश्वर द्वारा कथित हस्तपाट 144

इक्कीस हस्त पाट 145

हुडुक्का पर बजने वाले सोलह हस्तपाट 146

आठ विषम हस्त पाट 147

अतिरिक्त हस्तपाट 148

विलेपन 148

षटकरण 149

पंचसंच 149

त्रिसंच 150

हस्तपाट 150

पंचहस्त 150

पंचपाणि 150

अष्टसाम्य 151

त्रिवृत्ति 151

त्रिपाणिक 152

त्रियति 152

चतुर्मार्ग 153

त्रिलय 153

पृ० सं०

षष्ठ अध्याय : वर्तमान संगीत में प्रचलित अवनद्ध वाद्य-वादन सिद्धांत 157-261

ताल के दस प्राण 158

काल 158

मार्ग 159

क्रिया 160

अंग 162

ग्रह 163

जाति 165

कला 166

लय 167

यति 168

प्रस्तार 170

(क) दक्षिण भारतीय संगीत में प्रचलित अवनद्ध वाद्यों के सिद्धांत 171

ध्रुव ताल 174

मठ ताल 176

रूपक ताल 177

झम्प ताल 178

त्रिपुट ताल 179

अड्ड ताल 180

एक ताल 182

संगति वादन के सिद्धांत

आलापना 183

तानम् 184

पल्लवी 184

पृ० सं०

अनुपल्लवी 184

चरणम् 184

स्वतंत्र वादन के सिद्धान्त 189

(ख) उत्तर भारतीय संगीत में प्रचलित अवनद्धवाद्य-वादन के सिद्धान्त 193

संगति के सिद्धान्त 193

ख्याल गायन में तबला संगति 198

विलम्बित लय में ख्याल गायन के साथ तबला संगति 199

मध्यलय में ख्याल गायन के साथ तबला संगति 203

द्रुत लय में ख्याल गायन के साथ तबला संगति 205

ध्रुपद-धमार गायन में अवनद्ध वाद्यों की संगति 207

ठुमरी गायन में तबला संगति 208

दादरा गायन में तबला संगति 212

विलम्बित लय में तंत्रवाद्यों के साथ तबला संगति 214

मध्य लय में तंत्रवाद्यों के साथ तबला संगति 215

द्रुत लय में तंत्रवाद्यों के साथ तबला संगति 216

एकल वादन के सिद्धान्त 217

तबले के घराने- दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, फर्रूखाबाद, बनारस, पंजाब 220

वादन से पूर्व ध्यातव्य बिन्दु 225

तबले का चुनाव 225

तबले को स्वर में मिलाना 226

ताल का चयन 226

लहरा या नगमा वादक का चयन 227

लहरा या नगमा के राग का चयन 227

वादन तकनीक 228

पृ० सं०

उठान 229

चलन 232

पेशकार 233

कायदा 234

रेला 236

गत- 238-248

दुपल्ली गत, त्रिपल्ली, चौपल्ली, चक्रदार, मंझेदार, लाहौरी, जवाबी, जनानी, दर्ज की गत, किनार की गत, गत कायदा

फर्द 248

परण- 249

साधारण, चक्रदार, फरमाईशी, कमाली चक्रदार, एकहत्थी 251-258

बाँट 259

रौ 260

सप्तम अध्याय : अवनद्ध वाद्य वादकों के गुण एवं दोष 262-320

अवनद्ध वाद्य वादकों के गुण 266

सामान्य गुण 267

उत्तम वादक के गुण 271

मृदंग वादक के गुण 274

पणव वादक के गुण 275

दर्दर वादक के गुण 276

शार्ङ्गदेव द्वारा वर्णित अवनद्ध वादकों के गुण 277

मर्दल वादक के गुण 280

अवनद्ध वादकों के दोष

अवनद्ध वाद्यों की रस-निष्पत्ति में भूमिका 285

पृ० सं०

रसनिष्पत्ति विषयक विभिन्न मत 288

रस का भाव से सम्बन्ध 293

रसों की संख्या 298

तबला संगति के द्वारा रस-निष्पत्ति 303

वर्णों के द्वारा रस-निष्पत्ति 305

विभिन्न तालों के द्वारा रस-निष्पत्ति 307

लय और लयकारी द्वारा रस-निष्पत्ति 308

स्वतंत्र वादन द्वारा रस-निष्पत्ति 310

तालों की विभिन्न जातियों से रस-निष्पत्ति 310

विभिन्न घरानों के वादन से रस-निष्पत्ति 311

उपसंहार 314-320

संदर्भ ग्रन्थ-सूची 321-330

ध्वनि यंत्रस्थ संदर्भ-सूची 331-337

चित्रावली 338-344